

पंच महायज्ञ पुं. (तत्.) सद्ग्रहस्थ के लिए अनिवार्य माने गए पाँच कृत्य (यज्ञ), ब्रह्मयज्ञ (स्वाध्याय), देवयज्ञ (होम), भूतयज्ञ (बलि वैश्वदेव) पितृयज्ञ (पिंड क्रिया) तथा नृयज्ञ (अतिथि सत्कार)।

पंचकर्मी स्त्री. (तत्.) उपचार के पाँच अंग-पंचकर्म।

पंचकवल पुं. (तत्.) भोजन के पहले पशु पक्षियों के लिए निकाला जाने वाला पाँच ग्रासों का भोजन।

पंचकषाय पुं. (तत्.) जामुन, सेमर, बेर, मौलसिरि और बरियारा- इन पाँच वृक्षों की छाल का रस।

पंचकाम पुं. (तत्.) तंत्र के अनुसार पाँच 'काम-देव, काम, मन्मथ, कंदर्प, मकरध्वज, और मीनकेतु।

पंचकारण पुं. (तत्.) जैन शास्त्रों के अनुसार- कार्योत्पत्ति के पाँच कारण, काल, स्वभाव, नियति, पुरुष और कर्म।

पंचकृत्य पुं. (तत्.) ईश्वर के पाँच कर्म, सृष्टि, स्थिति ध्वंस व संहार-विधान, तिरोभाव और अनुग्रह करण।

पंचकेश पुं. (तत्.) अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश।

पंचकोण पुं. (तत्.) पाँच कोणों वाला स्थान, पदार्थ आदि ज्यो. लग्न से पाँचवा व नौवां स्थान वि. पाँच कोनों वाला।

पंचकोल पुं. (तत्.) आयु. पीपर, पिपरामूल, चव्य, चित्रकमल (चीता) और सोंठ इन पाँच औषधियों का (आठ माशा) समाहार।

पंचकोश पुं. (तत्.) वेदांत दर्शन के अनुसार आत्मा के आवरण रूप पाँच कोश, अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश तथा आनंदमय कोश।

पंचकोसी स्त्री. (तद्.) काशी की पाँच कोस की परिक्रमा।

पंचगंगा (घाट) पुं. (तद्.) गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा; इन पाँच नदियों का समाहार (पंचगंगा) इन पाँच नदियों का समाहार,

इन्हें 'पंचनद' भी कहा जाता है, (त्रिवेणी में गंगा, यमुना तथा सरस्वती हैं, इनमें 'किरणा' तथा 'धूतपापा' भी जुड़ गई हैं, कुछ विद्वान गंगा, नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा तथा कावेरी को पंचगंगा मानते हैं जो सांस्कृतिक एकता की दृष्टि से अधिक संगत है।

पंचगण पुं. (तत्.) आयुर्वेद चिकित्सा-पद्धति में प्रतिपादित पाँच औषधियों-विदारी गंधा, वृहती, पृश्निनी, निदिग्धिका तथा भूकुष्मांड का योग।

पंचगव्य पुं. (तत्.) गाय (गौ) से प्राप्त पाँच द्रव्य, दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र, ये पदार्थ अत्यंत पवित्र माने जाते हैं, इनका आनुपातिक योग।

पंचगीत पुं. (तत्.) श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध के अनुसार पाँच प्रसिद्ध प्रकरण, गोपीगीत, युगल गीत, वेणुगीत, भ्रमरगीत तथा महिषीगीत।

पंचगु वि. (तत्.) पाँच गायों के बदले प्राप्त हुआ (खरीदा हुआ)।

पंचगुण पुं. (तत्.) भौतिक पदार्थों के पाँच गुण, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध 2. वि. पाँच गुना।

पंचगुणी स्त्री. (तत्.) पाँच गुणों से युक्त।

पंचगोटिया पुं. (तद्.) ऐसा खेल जिसमें जमीन में रेखाएँ खींचकर पाँच-पाँच गोटियों से खेला जाता है।

पंचग्रह पुं. (तत्.) मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि ग्रहों का समूह।

पंचग्रास पुं. (तत्.) दे. पंचकवल।

पंचचक्र पुं. (तत्.) 1. पाँच व्यक्ति या पाँच प्रकार के जनों या व्यक्तियों का समूह 2. गंधर्व, पितर, देव, असुर और राक्षस 3. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और अंत्यज (निषाद) 4. पाँच तत्त्वों से उत्पन्न मनुष्य-जीवात्मा।

पंचजनी स्त्री. (तत्.) 1. पाँच मनुष्यों की मंडली 2. पंचायत।